बारह

सेवकाई में स्त्रियां

Women in Ministry

चूँकि यह सामान्य ज्ञान है कि स्त्रियां यीशु मसीह की कलीसिया के आधे से अधिक भाग को बनाती हैं, अत: उनके परमेश्वर की देह में पाई जाने वाली परमेश्वर के निर्धारित भूमिका को समझना महत्वपूर्ण है। बहुत सी कलीसियाओं और सेवकाईयों में स्त्रियों को बहुमूल्य कार्यकर्त्ताओं के रूप में देखा गया है।

तौभी, सभी स्त्रियों की भूमिकाओं को लेकर सहमत नहीं हैं। स्त्रियों को अक्सर कलीसिया में बोलने या अगुवाई करने के कुछ क्षेत्रों में रोका गया है। कुछ कलीसियाएं नारी पास्टर होने की अनुमति देती हैं, जबकि अधिकांश ऐसा नहीं करतीं। कुछ स्त्रियों को शिक्षा देने की अनुमति देती हैं जबकि कुछ नहीं देतीं। कुछ स्त्रियों को कलीसियाई सेवा के दौरान न बोलने को कहती हैं।

इनमें से अधिकांश असहमतियाँ 1कुरि. 14:34-35 और 1तीमु. 2:11-3:7 में स्त्रियों की भूमिकाओं के संबन्ध में पौलुस के शब्दों की विभिन्न व्याख्याओं पर आधारित है। ये पद हमारे अध्ययन का केन्द्र होंगे, विशिष्ट रूप से इस अध्याय के अन्त पर।

आरम्भ से

From the Beginning

आइये आरम्भ करते हुए सबसे पहले इस पर विचार करें कि पवित्रशास्त्र अपने प्रथम पृष्ठ पर स्त्रियों के बारे में क्या प्रगट करता है:

> तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया,
> अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया;
> नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की (उत्प. 1:27)।

बेशक, हम जानते हैं कि परमेश्वर ने हव्वा को बनाने से *पहले* आदम को बनाया था, और यह पौलुस के अनुसार निश्चय ही एक आत्मिक रूप से महत्वपूर्ण सच्चाई है (देखें 1तीमु. 2:3)। हम बाद में पौलुस द्वारा बताए जाने के अनुसार सृष्टि के इस क्रम के महत्व पर ध्यान देंगे, लेकिन यह स्त्रियों पर पुरुषों की सर्वोच्चता को प्रमाणित नहीं करता। हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्यों की रचना करने से पहले जानवरों को बनाया था (देखें उत्प. 1:24-28), और कोई भी जानवरों के पुरुषों से सर्वोच्च होने पर तर्क नहीं देगा।[52]

स्त्री को उसके पति के सहायक के रूप में बनाया गया था। यह पुन: उसकी हीनता (अधीनता) को प्रमाणित नहीं करता बल्कि विवाह में, उसकी भूमिका को प्रगट करता है। पवित्र आत्मा को हमारे सहायक के रूप में दिया गया है लेकिन वह निश्चय ही हमारे लिए हीन नहीं है। इसके विपरीत, वह हमारे लिए सर्वोच्च है। ऐसा कहा जा सकता है कि परमेश्वर द्वारा स्त्री की रचना उसके पति के लिए किया जाना प्रमाणित करता है कि पुरुषों को सहायता की ज़रूरत है। *परमेश्वर* ने ही कहा था कि पुरुष (आदम) का अकेला रहना अच्छा नहीं (देखें उत्प. 2:18)। इतिहास में उस समय यह सत्य असंख्य बार प्रमाणित हुआ है जब पुरुषों को उनकी पत्नियों की सहायता के बिना छोड़ा गया।

अन्त में, हम उत्पत्ति के कुछ प्रथम पृष्ठों पर ध्यान दें कि प्रथम स्त्री को प्रथम पुरुष की देह से बनाया गया था। उसे उसमें (पुरुष में) से लिया गया था। इस सत्य की ओर संकेत देते हुए कि उसके बिना उसमें कुछ कमी थी और यह कि वे मूल रूप से एक थे। इसके अलावा, परमेश्वर द्वारा उन्हें अलग किये जाकर फिर से यौन एकता के द्वारा जोड़े जाने का लक्ष्य था, केवल पुनरुत्पादन का एक स्रोत या साधन नहीं, बल्कि प्रेम को व्यक्त करने और पारस्परिक प्रेम को अनुभव करने के लिए जिसके लिए दोनों एक दूसरे पर निर्भर हैं।

इन अध्यायों के बारे में सृष्टि की प्रत्येक चीज़ एक लिंग के दूसरे पर सर्वोच्च होने के विचार के विरुद्ध खड़ी होती है, या फिर एक के दूसरे पर अधिकार करने के। परमेश्वर के स्त्रियों के लिए सेवकाई और विवाह में भिन्न भूमिकाएं तैयार करने के कारण मसीह में पुरुषों के साथ उनकी समानता का कोई लेना देना नहीं है, जिसमें ''न तो कोई नर है न ही नारी'' (गल. 3:28)।

52. इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि आदम के बाद से प्रत्येक पुरुष को परमेश्वर द्वारा स्त्री की रचना किये जाने के पश्चात् बनाया गया है जो कि उसे जन्म देती हैं। आदम के बाद से प्रत्येक पुरुष स्त्री से आया है, जैसा पौलुस हमें 1 कुरिन्थियों 11:11-12 में स्मरण कराता है। निश्चय ही इस पर कोई तर्क नहीं देगा कि ईश्वरीय योजना यह प्रमाणित करती है कि पुरुष अपनी माताओं से निम्न हैं।

पुराने नियम में सेवकाई में स्त्रियां
Women in Ministry in the Old Testament

इस नींव के डाले जाने के साथ आइये अब कुछ उन स्त्रियों पर विचार करें जिनका प्रयोग परमेश्वर ने पुराने नियम में अपने ईश्वरीय उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किया था। इसमें संदेह नहीं कि परमेश्वर ने पुराने नियम के समय से ही पुरुषों को व्यावसायिक सेवकाई में बुलाया था, जैसा उसने नये नियम के समयों में किया था। मूसा, हारून, यहोशू, यूसुफ, शमूएल और दाऊद जैसे पुरुषों की कहानियों से पुराने नियम के पृष्ठ भरे हुए हैं।

तथापि, अधिकांश स्त्रियां इस प्रमाण के रूप में खड़ी होती हैं कि परमेश्वर जिसे चाहे उसे बुला व प्रयोग कर सकता है, और परमेश्वर द्वारा तैयार की गई स्त्रियां हर उस कार्य को करने में उपयुक्त हैं जिसे करने को परमेश्वर उन्हें बुलाता है।

इन स्त्रियों पर विशिष्ट रूप से मनन करने के पूर्व यह ध्यान देना चाहिए कि पुराने नियम में परमेश्वर के प्रत्येक महान जन को जन्म देने व पालन पोषण करने वाली एक स्त्री थी। यकोबेद के बिना मूसा नाम का कोई व्यक्ति न होता (देखें निर्ग. 6:20)। यदि इन व्यक्तियों की माँएं ऐसी न होतीं तो परमेश्वर का कभी कोई महान जन न होता। स्त्रियों को परमेश्वर द्वारा प्रभु में बच्चों का पालन पोषण करने को एक भारी उत्तरदायित्व और प्रशंसनीय सेवकाई सौंपी गई है (देखें 2 तीमु. 1.5)।

यकोबेद न केवल परमेश्वर द्वारा बुलाए गए दो जनों की मां थी, अर्थात्, हारुन और मूसा की, बल्कि एक परमेश्वर द्वारा बुलाई गई स्त्री, उनकी बहन की भी, जो कि भविष्यद्वक्तिनी और मरियम नाम आराधना की अगुवा थी (देखें निर्गमन 15:20)। मीका 6:4 में, परमेश्वर ने मरियम को मूसा और हारून के साथ इस्राएल के अगुवा के रूप में क्रमबद्ध किया है:

> मैं तो तुझे मिस्र देश से निकाल ले आया, और दासत्व के घर में से तुझे लाया; और तेरी अगुवाई *करने को मूसा, हारून और मरियम को भेज दिया* (इस पर बल दिया गया है)।

बेशक, मरियम की इस्राएल में अगुवाई में भूमिका मूसा के समान प्रभावशाली न थी। तौभी एक भविष्यक्तिनी के रूप में, मरियम परमेश्वर की ओर से बोली, और मैं सोचता हूं कि उसके द्वारा परमेश्वर के संदेश को स्वीकार करना सुरक्षाजनक है, जिसे केवल स्त्रियों के लिए ही नहीं दिया गया था, बल्कि इस्राएल के पुरुषों के लिए भी।

इस्राएल पर एक स्त्री न्यायी
A Female Judge Over Israel

दूसरी स्त्री जिसे परमेश्वर ने इस्राएल में एक अगुवा के रूप में उठाया वह दबोरा

थी जो इस्राएल के न्यायियों के समय में रही थी। वह एक भविष्यद्वक्तिनी भी थी और वह इस्राएल में गिदोन, यिप्तह और शिमशोन के समान एक अनुयायी थी। हमें बताया गया है कि ''इस्राएली उसके पास न्याय के लिए जाया करते थे'' (न्यायि. 4:5)। अत: वह केवल स्त्रियों का ही नहीं बल्कि पुरुषों का भी न्याय करती थी। ऐसा कहने में कोई गलती नहीं होगी; *एक स्त्री ने पुरुषों को बताया कि क्या करना है, और परमेश्वर ने उसे ऐसा करने के लिए नियुक्त किया।*

उन बहुत सी स्त्रियों के समान जिन्हें परमेश्वर अगुवाई में बुलाता है, दबोरा का सामना एक ऐसे व्यक्ति से हुआ जिसे परमेश्वर के वचन को एक स्त्री पात्र के द्वारा स्वीकार करने में कठिनाई थी। उसका नाम बाराक था, और चूंकि वह दबोरा द्वारा उसे दिये गए कनानी प्रधान सीसरा के प्रति निर्देशों के लिए संदेही था, दबोरा ने उससे कहा कि सीसरा की हत्या करने का सम्मान एक स्त्री को मिलेगा। वह सही थी। याएल नामक एक स्त्री को पवित्रशास्त्र में सोते हुए सीसरा की कनपटी पर खूंटी ठोंकने के लिए याद किया जाता है (देखें न्यायि. 4)। कहानी का अन्त बाराक और दबोरा के एक साथ गाए गीत से होता है (देखें न्यायि. 5), और इस तरह से संभवत: बाराक इस सब के पश्चात् ''स्त्री की सेवकाई'' के प्रति विश्वासी हो गया था।

एक तीसरी भविष्यद्वक्तिनी

A Third Prophetess

एक तीसरी स्त्री जिसका वर्णन पुराने नियम में भविष्यद्वक्तिनी के रूप में किया गया है वह हुल्दा है। परमेश्वर ने उसका प्रयोग *एक पुरुष*-यहूदा का राजा योशिय्याह को विश्वसनीय पैगम्बरी अन्तर्दृष्टि और निर्देश देने के लिए किया (देखें 2 राजा 22)। पुन: हम एक पुरुष को निर्देश देने के लिए परमेश्वर द्वारा एक स्त्री का प्रयोग किये जाने को देखते हैं। बहुत संभव है कि परमेश्वर द्वारा हुल्दा का प्रयोग नियमितता की इतनी अधिक मात्रा के साथ किया गया था, अन्यथा योशिय्याह उसके कहे पर विश्वास न करता।

लेकिन परमेश्वर ने मरियम, दबोरा और हुल्दा को एक भविष्यद्वक्तिनी के रूप में क्यों बुलाया? क्या वह उनकी जगह पर पुरुषों को नहीं बुला सकता था?

निश्चय ही परमेश्वर उन कार्यों को करने के लिए पुरुषों को बुला सकता था जिन्हें इन स्त्रियों ने किया था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया और कोई नहीं जानता कि क्यों। हमें इससे केवल यह सीखना है कि हमें इस बारे में सावधान रहना है कि परमेश्वर कब किसे सेवकाई के लिए बुला लेता है। यद्यपि परमेश्वर ने सामान्यता पुराने नियम में अगुवाई के कार्य के लिए पुरुषों को चुना, तौभी कई बार उसने स्त्रियों को भी चुना।

अन्तत:, इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि पुराने नियम में स्त्री सेवकाई के सभी तीन उत्कृष्ठ उदाहरण भविष्यद्वक्तिनियों के थे। उदाहरण के लिए, किसी भी

स्त्री को याजक होने के लिए नहीं बुलाया गया था। अत: परमेश्वर ने सेवकाई के कुछ कार्यों को विशिष्ट रूप से पुरुषों के लिए आरक्षित किया था।

नये नियम में स्त्रियों की सेवकाई

Women in Ministry in the New Testament

रोचक है कि हम नये नियम में भी एक स्त्री को परमेश्वर द्वारा भविष्यद्वक्तिनी होने के लिए बुलाया हुआ देखते हैं। जब यीशु कुछ ही दिन (शिशु) के थे, हन्नाह ने उसे पहचानते हुए उसके मसीहा होने के घोषणा की:

> और ओर के गोत्र में से हन्ना नाम फनूएल की बेटी एक *भविष्यद्वक्तिन* थी: वह बुहत बूढ़ी थी, और ब्याह होने के बाद सात वर्ष अपने पति के साथ रह पाई थी। वह चौरासी वर्ष से विधवा थी: और मन्दिर को नहीं छोड़ती थी पर उपवास और प्रार्थना कर करके रात-दिन उपासना किया करती थी (लूका 2:36-38, पर बल दिया गया है)।

ध्यान दें कि हन्ना उन सभी से बोली जो ''यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोहते थे।'' जिसमें अवश्य ही पुरुष भी होंगे। अत: हन्ना के बारे में यह कहा जा सकता है कि वह पुरुषों को मसीह के बारे में सिखा सकी।

नये नियम में अन्य और भी स्त्रियां हैं जिन्हें परमेश्वर ने भविष्यवाणी के क्षेत्र में प्रयुक्त किया। यीशु की मां मरियम निश्चय ही इस समूह में थी (देखें लूका 1:46-55)। प्रत्येक समय मरियम के पैगम्बरी शब्दों को कलीसियाई सर्विस में पढ़ा जाता है। ऐसा कहा जा सकता है कि एक स्त्री कलीसिया में शिक्षा दे रही है और परमेश्वर द्वारा स्त्री को सम्मान देते हुए अपने पुत्र को उसके द्वारा जगत में भेजना, एक ऐसी चीज़ जिसे परमेश्वर और किसी भी माध्यम से कर सकता है।

सूची जारी है। परमेश्वर ने योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा पहले से ही कह दिया था कि परमेश्वर द्वारा पवित्र आत्मा उण्डेले जाने पर इस्राएल में पुत्र और पुत्रियां भविष्द्वाणी करेंगे (देखें योएल 2:28)। पतरस ने इस बात की पुष्टि की कि योएल की भविष्यवाणी निश्चय ही नई वाचा के विस्तार में लागू होती थी (देखें प्रेरित. 2:17)।

हमें प्रेरितों के काम 21:8-9 में बताया गया है कि प्रचारक फिलिप्पुस की चार बेटियां थीं जो भविष्यद्वक्तिन थीं।

पौलुस ने कलीसियाई सभा में स्त्रियों के भविष्यवाणी करने के बारे में लिखा (देखें 1 कुरि. 11:5)। संदर्भ से यह स्पष्ट हो जाता है कि उस समय वहां पुरुष भी उपस्थित थे।

परमेश्वर द्वारा स्त्रियों का प्रयोग किये जाने के सभी पवित्रशास्त्रीय उदाहरण कि

भी उन्हें भविष्यद्वक्तनी के रूप में प्रयोग किया गया, हमारे पास इस तरह के विचार के समापन करने का कोई अच्छा कारण नहीं कि परमेश्वर स्त्रियों को इस तरह की सेवकाइयों में प्रयुक्त कर सकता है। इसके अतिरिक्त ऐसी कोई भी चीज़ हमें यह सोचने को मजबूर नहीं करे कि स्त्रियां परमेश्वर की ओर से पुरुषों के लिए भविष्यवाणी नहीं कर सकतीं।

याजक अथवा पास्टर के रूप में स्त्रियां
Women as Pastors?

स्त्रियों के पास्टर के रूप में कार्य करने के बारे में आप क्या सोचते हैं? यह स्पष्ट है कि पास्टर/ प्राचीन/निरीक्षक के कार्य परमेश्वर द्वारा पुरुषों के लिए हैं:

> यह बात सत्य है कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, तो वह भले काम की इच्छा करता है। सो चाहिए कि अध्यक्ष निर्दोष और एक ही पत्नी *का पति* हो (1तीमु. 3:1-2, पर बल दिया गया है)।
>
> मैं इसलिये तुझे क्रेते में छोड़ आया था, कि तू शेष रही बातों को सुधारे और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर नगर प्राचीनों के नियुक्त करे। जो निर्दोष और एक ही पत्नी के *पति* हों (तीतु 1:5-6, पर बल दिया गया है)।

पौलुस स्पष्ट रूप से यह नहीं कहता है कि स्त्रियों को कार्यालय के कार्य से अलग रखा गया है, अत: हमें कोई भी परिणाम निकालने से पहले सावधान रहना चाहिए। आज संसार के कई भागों में, विशेषकर विकासशील देशों में स्त्री पास्टर/प्राचीन/निरीक्षक पाई जाती हैं, लेकिन अभी भी वे अल्पसंख्यक हैं। शायद परमेश्वर स्त्रियों को उस समय अपनी सेवकाई में बुलाता है जब अगुवाई में पुरुषों की कमी होती है। यह भी संभव है कि आज मसीह की देह में अधिकांश स्त्री पास्टरों को उन अन्य सेवकाई कार्यों के लिए बुलाया गया होता है जो कि बाइबल के आधार पर स्त्रियों के लिए उचित हैं, जैसे भविष्यद्वक्तिन का कार्य, परन्तु वर्तमान कलीसियाई ढांचा उन्हें केवल पास्टर की भूमिका निभाने की अनुमति देता है।

पास्टर/प्राचीन/निरीक्षक का कार्य पुरुषों के लिए ही आरक्षित क्यों है? इस कार्यालय के कार्य की समझ इसे समझने में हमारी सहायता कर सकती है। पास्टर/प्राचीन/निरीक्षक की पवित्रशास्त्र के अनुसार निम्नलिखित होने की मांग है,

> अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और लड़केवालों को सारी गंभीरता से आधीन रखता हो। (जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली क्यों करेगा)'' (1तीमु. 3:4-5)।

यह जानने पर कि एक नये नियम के प्राचीन ने छोटी गृह कलीसिया का निरीक्षण कार्य किया, इस मांग अथवा आवश्यकता का सही अर्थ निकलता है। उसकी भूमिका उसी तरह से थी जैसे एक पिता अपने घराने का निरीक्षण करता है। इससे हमें यह जानने में सहायता मिलती है कि याजकीय कार्य एक पुरुष के द्वारा क्यों किये जाने चाहिए क्योंकि यह एक परिवार के ढांचे को अधिक घनिष्टता से प्रतिबिम्बित करता है, जिसमें नेतृत्व एक पति के द्वारा किया जाना चाहिए, न कि पत्नी के।

प्रेरितों के रूप में स्त्रियां?

Women as Apostles?

हमने अन्त में यह माना है कि स्त्रियां भविष्यद्वक्तिन का कार्य कर सकती है (यदि उन्हें परमेश्वर द्वारा बुलाया गया है)। अन्य तरह की सेवकाई के बारे में आपका क्या सोचना है? रोमियों 16 में पौलुस के अभिवादन को पढ़ना जानकारी देने वाला है जहां वह उन असंख्य स्त्रियों की सराहना करता है जिन्होंने परमेश्वर के राज्य के लिए सेवकाई में सेवा की। इनमें से एक को प्रेरित के रूप में सूचीगत किया गया है। नीचे पाए जाने वाले तीन उद्धरणों में, मैंने स्त्री के नामों को तिरछा किया है:

> मैं तुम से *फीबे* को, जो हमारी बहिन ओर किंख्रिया की कलीसिया की सेविका है, विनती करता हूं कि तुम जैसा कि पवित्र लोगों को चाहिए, उसे प्रभु में ग्रहण करो; और जिस किसी बात में उसको तुम से प्रयोजन हो, उस की सहायता करो; क्योंकि वह भी बहुतों की वरन् मेरी भी उपकारिणी हुई है (रोमि. 16:1-2, पर बल दिया गया है)।

क्या ही समर्थन है! हम ठीक-ठीक नहीं जानते कि *फीबे* की सेवकाई को किस चीज़ ने पूरा किया, लेकिन पौलुस ने उसे ''उस कलीसिया की सेविका कहा जो किंख्रिया में है'' और ''बहुतों की सहायिका'' भी, जिनमें पौलुस भी शामिल था। प्रभु के लिए वह जो कुछ कर रही थी, इसके लिए रोम में समस्त कलीसिया के प्रति पौलुस द्वारा उसका समर्थन किया जाना महत्वपूर्ण होना चाहिए।

इसके बाद हम *प्रिसका* (प्रिस्किला) के बारे में पढ़ेंगे, जिसने अपने पति अक्विला के साथ, एक ऐसी महत्वपूर्ण सेवकाई की जिसके लिए समस्त अन्यजाति कलीसियाओं ने उनकी सराहना की:

> *प्रिसका* और अक्विला को जो यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, नमस्कार। उन्होंने मेरे प्राण के लिये अपना ही सिर दे रखा था और केवल मैं ही नहीं, वरन् अन्यजातियों की सारी कलीसियाएं भी उनका धन्यवाद करती हैं। और उस कलीसिया को भी नमस्कार जो उनके घर में है। मेरे प्रिय हपैनितुस को जो मसीह के लिए आसिया का

> पहिला फल है, नमस्कार। *मरियम* को जिसने तुम्हारे लिये बहुत परिश्रम किया, नमस्कार। अन्द्रुनीकुस और यूनियास को (या *यूनिया,* के जे वी के अनुवादानुसार, जो कि स्त्रीलिंग है)। जो मेरे कुटुम्बी हैं, और मेरे साथ कैद हुए थे, और प्रेरितों में नामी हैं; और मुझ से पहले मसीह में हुए थे, नमस्कार (रोमियों 16:3-7, पर बल दिया गया है)।

यूनियास के संबंध में, यह विचार करना तर्कपूर्ण होगा कि एक व्यक्ति जो ''प्रेरितों में अद्वितीय'' है, वही एक प्रेरित हो सकता है। यदि सही अनुवाद *यूनिया* है, तो वह एक स्त्री प्रेरित थी। *प्रिसका* और *मरियम* प्रभु की कर्मचारी थीं।

> अम्पलियातुस को, जो प्रभु में मेरा प्रिय है, नमस्कार। उरबानुस को, जो मसीह में हमारा सहकर्मी है, और मेरे प्रिय इस्तखुस को नमस्कार। अपिल्लेस को जो मसीह में खरा निकला, नमस्कार। अरिस्तुबुलुस के घराने को नमस्कार। मेरे कुटुम्बी हेरोदियोन को नमस्कार। नरकिस्सुस के घराने के जो लोग प्रभु में हैं, उनको नमस्कार। मेरे कुटुम्बी हेरोदियोन को नमस्कार। *त्रूफैना* और *त्रूफोसा* को जो प्रभु में परिश्रम करती हैं, नमस्कार। प्रिया पिरसिस को जिसने प्रभु में बहुत परिश्रम किया, नमस्कार। रूफुस को जो प्रभु में चुना हुआ है और *उसकी माता जो मेरी भी है,* दोनों को नमस्कार। असुक्रितुस और फिलगोन और हिमस और पत्रुबास और हिमांस और उन के साथ के भाइयों को नमस्कार। फिलुलुगुस और *यूलिया* और नेर्युस और *उसकी बहन,* और उलुम्पास और उनके साथ के सब पवित्र लोगों को नमस्कार (रोमि. 16:8-15, अतिरिक्त पर बल दिया गया है)।

स्पष्ट है कि स्त्रियां सेवकाई में ''कर्मी अथवा कर्मचारी'' हो सकती हैं।

स्त्रियां शिक्षक के रूप में?

Women as Teachers?

स्त्री शिक्षकों के बारे आप क्या सोचते हैं? नया नियम इस बारे में नहीं बताता। बेशक, नया नियम किसी भी पुरुष के शिक्षक के रूप में बुलाए जाने के बारे में भी नहीं बताता। प्रिस्किला (जिसका ऊपर वर्णन किया गया और जिसे प्रिसका नाम से भी जाना जाता था), अक्विला की पत्नी, छोटे दर्जे पर शिक्षा से जुड़ी थी। उदाहरण के लिये जब उसने और अक्विला ने अपुल्लोस को इफिसुस में त्रुटिपूर्ण प्रचार करते सुना तो ''वे उसे अपने यहां ले गए, और परमेश्वर का मार्ग उसको और भी ठीक ठीक बताया'' (प्रेरित. 18:26)। कोई भी इस बारे में विवाद नहीं कर सकता कि

प्रिस्किला ने अपने पति की सहायता एक पुरुष-अपुल्लोस को सिखाने में की थी। इसके अतिरिक्त, पवित्रशास्त्र में दो बार पौलुस ने प्रिस्किला और अक्विला का यह लिखते हुए हुए वर्णन किया है, ''उन के घर की कलीसिया'' (देखें रोमि. 16:3-5; 1 कुरि. 16:19), और वह रोमियों 16:3 में *दोनों* को ''यीशु में सहकर्मी'' कहता है। इसमें बहुत कम ही संदेह है कि प्रिस्किला की अपने पति के साथ सेवकाई में कुछ सक्रिय भूमिका थी।

जब यीशु ने स्त्रियों को पुरुषों को सिखाने की *आज्ञा* दी

When Jesus commanded Women to Teach Men

पौलुस द्वारा स्त्रियों के कलीसिया में शांत रहने और स्त्रियों को पुरुषों को शिक्षा देने से मना करनेवाले शब्दों को संबोधित करने से पूर्व, आइये एक और पवित्रशास्त्रीय पद पर विचार करें जो हमारी उन्हें संतुलित करने में सहायता करेगा।

यीशु के पुनरुत्थान पर, एक स्वर्गदूत ने तीन स्त्रियों को यीशु के पुरुष शिष्यों को सिखाने के लिए नियुक्त किया। इन स्त्रियों को शिष्यों को यह बताने के लिए निर्देशित किया गया था कि यीशु जी उठा है और यह कि वह उन्हें गलील में दिखेगा। लेकिन यही सब कुछ नहीं है। कुछ समय के पश्चात् यीशु स्वयं उन स्त्रियों पर प्रगट हुआ और उन्हें आज्ञा दी कि वे शिष्यों को गलील जाने का निर्देश दें (देखें मत्ती 28:1-10; मर. 16:1-7)।

सर्वप्रथम, मैं सोचता हूं कि यीशु ने पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों पर सबसे पहले प्रगट होना महत्वपूर्ण क्यों समझा। दूसरा, यदि मौलिक व सैद्धान्तिक रूप से स्त्रियों द्वारा पुरुषों को शिक्षा देना गलत था, तो यीशु स्त्रियों को अपने पुनरुत्थान का प्रचार पुरुषों पर करने के लिए नहीं कहता; जानकारी का एक नगण्य भाग, जिसे वह अपने आप भी उन तक पहुंचा सकता था (जैसा उसने बाद में किया भी)। इस वास्तविकता पर कोई भी तर्क नहीं दे सकता: प्रभु यीशु ने स्त्रियों को कुछ पुरुषों को एक अनिवार्य सत्य सिखाने और आत्मिक निर्देश देने का निर्देश दिया।

समस्यात्मक परिच्छेद

The Problem Passages

अब हम इस बारे में समझते हैं कि बाइबल सेवकाई में स्त्रियों की भूमिका के बारे में कितना अधिक बताती है। अत: हम पौलुस के लेखों में ''समस्यात्मक परिच्छेदों'' की व्याख्या करने के योग्य हो गए हैं। आइये सबसे पहले उसके द्वारा स्त्रियों को कलीसिया में शांत रहने के संबंध में कहे गए शब्दों पर ध्यान दें:

स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बात करने

> की आज्ञा नहीं, परन्तु आधीन रहने की आज्ञा है जैसा व्यवस्था में लिखा भी है। और यदि वे कुछ सीखना चाहें तो घर में अपने-अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है (1 कुरि. 14:34-35)।

कई कारणों से कुछ प्रश्न उत्पन्न होते हैं, यदि ये कुरिन्थियों द्वारा उसे लिखे गए प्रश्नों के संबंध में उसकी ओर से उन्हें निर्देश थे, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इस पत्र के दूसरे भाग में, पौलुस, कुरिन्थियों को उस पत्र का जवाब दे रहा था जो उन्होंने उसे लिखा था (देखें 1 कुरि. 7:1, 25; 8:1;12:1; 16:1, 12)।

इसके अतिरिक्त, अगले ही पद में, पौलुस कुरिन्थियों को स्त्रियों के कलीसिया में चुप रहने की नीति पर जवाब देते हुए लिखता है:

> तथा परमेश्वर का वचन तुम में से निकला? या केवल तुम ही तक पहुंचा है? (1 कुरि. 14:36)।

किंग जेम्स संस्करण इस पद का अनुवाद इस तरह से करता है जिससे पौलुस कुरिन्थी लोगों के रवैये से अधिक हैरान लगता है:

> क्यों? परमेश्वर का वचन तुममें से आया? या यह केवल तुम्हारे लिये ही आया है? (1 कुरि. 14:36)।

पौलुस दो अलंकारिक प्रश्नों को कर रहा है। दोनों का जवाब *नहीं* है। कुरिन्थी परमेश्वर के वचन को उत्पन्न करने वाले नहीं थे, न ही परमेश्वर का वचन केवल उन्हें दिया गया था। पौलुस के प्रश्न उनके गर्व को झिड़कने के लिए हैं। यदि वे उन दो पदों के प्रति उसकी प्रतिक्रिया हैं जो बाद में आते हैं तो ये इस तरह से हो सकते हैं, ''तुम अपने बारे में क्या सोचते हो? जबकि तुम इस बारे में आज्ञा निकालते हो कि परमेश्वर अपने वचन को बोलने के लिए किसका प्रयोग कर सकता है? परमेश्वर यदि चाहे तो वह स्त्रियों का प्रयोग कर सकता है, और यदि तुम उन्हें चुप कराते हो तो मूर्ख हो।''

यह व्याख्या हमें उस समय उचित जान पड़ती है जब हम इस पर ध्यान देते हैं कि इसी पत्र में उसने स्त्रियों के कलीसियों में उचित रूप से भविष्यवाणी करने को कहा था (देखें 1कुरि. 11:5), कुछ ऐसा जिसमें उन्हें शांत या चुप रहने की आवश्यकता *नहीं* होगी। इसके अतिरिक्त, कुछ ही पदों के बाद, पौलुस सभी कुरिन्थियों को जिनमें सित्रयां भी थीं, प्रेरित करते हुए कहता है[53], ''भविष्यवाणी करने की धुन में रहो'' (1 कुरि. 14:39)। अत: 14:34-35 में स्त्रियों को चुप रहने की आज्ञा देकर उस पर आवरण आज्ञा को डालकर वह अपनी ही बात का विरोध करता।

---

53. पौलुस का उपदेश ''भाइयो'' के लिए है, एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग उसने इस पत्र में 27 बार किया है, जो कि कुरिन्थ की समस्त कलीसियाई देह के संदर्भ में है, न कि केवल पुरुषों के।

अन्य संभावनाएं
Other Possibilities

आइये कुछ समय के लिये यह मान लेते हैं कि 1 कुरिन्थियों 14:34-35 के शब्द पौलुस के मूल शब्द हैं और वह स्त्रियों को चुप रहने का निर्देश दे रहा है।

अत: वह जो कहता है उसका अर्थ हमें कैसे लगाना चाहिए?

पुन: हमें अचरज होगा कि पौलुस कलीसियाई सभाओं में स्त्रियों के चुप रहने की एक आवृत्त करने वाली आज्ञा क्यों दे रहा है जबकि उसी पत्र में उसने कहा कि वे कलीसियाई सभाओं के अलावा सार्वजनिक रूप में प्रार्थना और भविष्यवाणी कर सकती हैं।

इसके अतिरिक्त, पौलुस उन बहुत सी बाइबल की घटनाओं से अवगत था जिसके बारे में हम पहले ही देख चुके हैं कि परमेश्वर ने स्त्रियों को अपने वचन को सार्वजनिक रूप में बोलने के लिए प्रयोग किया, यहां तक कि पुरुषों के समक्ष भी। वह उन्हें चुप क्यों कराना चाहेगा जिनका अभिषेक परमेश्वर ने बोलने के लिए किया था?

निश्चय ही, सामान्य बुद्धि ज्ञान यह बताता है कि पौलुस का अर्थ कलीसियाई सभाओं में स्त्रियों के *पूरी तरह* से चुप रहने से नहीं था। स्मरण रखें कि आरम्भिक कलीसियाऐं घरों में एकत्रित होकर एक साथ भोजन किया करती थी। क्या हम यह सोचें कि स्त्रियां घर में प्रवेश करने के समय से लेकर जाने के समय तक कुछ भी नहीं बोलती थीं? वे भोजन को पकाते व एक साथ खाते हुए क्या कुछ भी नहीं बोलती थीं? वे उस पूरे समय में अपने बच्चों से कुछ भी नहीं कहती थीं? इस तरह का विचार व्यर्थ प्रतीत होता है।

यदि यीशु के नाम में ''दो या तीन इकट्ठा हों'' तो वह उनके बीच में होता है (देखें मत्ती 18:20), अत: कलीसियाई सभाओं में जब दो स्त्रियां एक दूसरे से मिलती थीं, तो क्या वे कुछ नहीं बोलती थीं?

नहीं, यदि 1 कुरिन्थियों 14:34-35 पौलुस का निर्देश है, वह कलीसिया में केवल सही व्यवस्था न रखने की छोटी समस्या के बारे में बोल रहा था। कई स्त्रियां प्रश्न पूछने में व्यवस्था बनाए नहीं रखती थीं। परन्तु पौलुस का उद्देश्य यह नहीं था कि स्त्रियां सारी सभा में चुप बैठी रहें, इससे कुछ पद पहले भविष्यद्वक्ताओं को निर्देश देते हुए, उसका उद्देश्य पूरी सभा में उनके लिए चुप रहने का था:

> परन्तु यदि दूसरे (भविष्यद्वक्ता) पर जो बैठा है, कुछ ईश्वरीय प्रकाश हो, *तो पहला चुप हो जाए* (1 कुरि. 14:30, पर बल दिया गया है)।

यहां पर ''चुप रहने'' का अर्थ ''अस्थाई रूप से न बोलने'' से है।

पौलुस ने उन अन्य भाषा बोलने वालों को उस समय चुप रहने के लिए कहा जब सभा में उसका अर्थ बताने वाला कोई न हो:

> परन्तु यदि अनुवाद करनेवाला न हो, *तो अन्य भाषा बोलने वाला कलीसिया में शान्त रहे,* और अपने मन से, और परमेश्वर से बातें करे (1 कुरि. 14:28 पर बल दिया गया है)।

क्या पौलुस इस तरह के लोगों को *पूरी* सभा में *पूरी तरह* से शांत व चुप रहने का निर्देश दे रहा था? नहीं, वह केवल उन्हें इतना कह रहा था कि अपनी अन्य भाषा को आदर देने के लिए वे उस समय तक न बोलें जब तक कोई अनुवाद करने वाला न हो। ध्यान दें कि पौलुस ने उन्हें बताया, ''कलीसिया में चुप रहने'' का यही आदेश उसने 1 कुरि. 14:34-35 में स्त्रियों को भी दिया। अत: पौलुस द्वारा स्त्रियों को कहे शब्दों का अर्थ हम ''पूरी सभा में चुप रहने'' से क्यों निकालें और उसके बाद अन्य भाषा बोलनेवालों के लिए उसके कहे शब्दों का अर्थ इस तरह से निकालें ''सभाओं में कुछ विशिष्ट समयों पर बोलने से बचे रहें?''

अन्त में, ध्यान दें कि पौलुस यहां *सभी* स्त्रियों को नहीं बोल रहा था। उसके शब्द केवल विवाहित स्त्रियों के लिये ही थे, क्योंकि उनके पास यदि प्रश्न थे तो उन्हें ''घर में अपने पति से पूछने'' का निर्देश दिया गया था।[54] शायद सारी समस्या का भाग यही था कि विवाहित स्त्रियां *अपने* पतियों के होते हुए भी दूसरे पतियों से प्रश्न के जवाब पूछा करती थीं। इस तरह के दृश्य को निश्चय ही अनुपयुक्त माना जा सकता है, और यह उनके अपने पतियों के प्रति अनादर तथा समर्पण की कमी को प्रगट करता है। यदि पौलुस इस समस्या के बारे में बोल रहा था, तब उसके इस तर्क को जाना जा सकता है कि स्त्रियों को अपने पतियों के प्रति समर्पित क्यों रहना चाहिए, जैसे व्यवस्था में उत्पत्ति के आरम्भिक पृष्ठों से स्पष्ट भी किया था (देखें 1 कुरि. 14:34)।

सारांश में, यदि पौलुस वास्तव में 1 कुरिन्थियों 14:34-35 में स्त्रियों को चुप रहने के संबन्ध में निर्देश दे रहा है, वह विवाहित स्त्रियों को अनुपयुक्त समय में प्रश्न न पूछने या अपने पतियों से आदर रहित प्रश्न न करने के बारे में बोल रहा है। इसके अलावा वे भविष्यद्वाणी कर सकती हैं, प्रार्थना कर सकती हैं और बोल सकती हैं।

---

54. इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि मूल यूनानी में, स्त्रियों और पत्नी के लिए भिन्न शब्द नहीं थे, न ही पुरुष और पति के लिए। अत: हमें संदर्भ से निर्धारित करना है कि लेखक पुरुषों और स्त्रियों से बोल रहा था या पतियों और पत्नियों से। विचाराधीन परिच्छेद में, पौलुस पत्नियों से बोल रहा है क्योंकि वही घरों में अपने पतियों से पूछ सकती थीं।

अन्य समस्यात्मक परिच्छेद
The Other Problem Passage

अन्त में, हम दूसरे 'समस्यात्मक परिच्छेद' पर आते हैं जो पौलुस के तीमुथियुस को लिखे पहले पत्र में पाया जाता है:

> और स्त्री को चुपचाप पूरी आधीनता से सीखना चाहिए। और मैं कहता हूं, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे। क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई। और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई (1 तीमु. 2:11-40)।

निश्चय ही पौलुस मरियम, दबोरा, हुल्दा और हन्नाह नामक चारों भविष्यद्वक्तिनों से अवगत था जो परमेश्वर की ओर से पुरुषों और स्त्रियों से बोलीं, और परमेश्वर की इच्छा के बारे में उन्हें प्रभावी रूप से सिखाया भी। निश्चय ही वह इस्राएल की न्यायी दबोरा के बारे में जानता था जिसने पुरुषों और स्त्रियों पर कुछ मात्रा में अधिकार का प्रयोग किया। निश्चय ही वह जानता था कि पिन्तेकुस्त के दिन परमेश्वर ने अपने आत्मा को विशिष्ट रूप से योएल की भविष्यद्वाणी को पूरा करते हुए सभी पर उण्डेला था, जिससे पुत्र और *पुत्रियां* परमेश्वर के वचन की भविष्यद्वाणी करें। निश्चय ही वह जानता था कि यीशु ने कुछ स्त्रियों को नियुक्त किया कि वे उसके संदेश को ले जाकर कुछ पुरुष प्रेरितों तक पहुंचाएं। निश्चय ही वह कुरिन्थ की कलीसिया में स्त्रियों के भविष्यवाणी और प्रार्थना करने के संबन्ध में कहे हुए शब्दों से परिचित था। निश्चय ही उसे याद था कि उसने कुरिन्थियों को बताया था कि उनमें से प्रत्येक को पवित्र आत्मा के बारे में एक दूसरे को बताना चाहिए (देखें 1 कुरि. 14:26)। अत: इन शब्दों को तीमुथियुस को लिखते समय वह क्या सूचित करना चाहता था?

ध्यान दें कि पौलुस अपने निर्देशों के आधार के रूप में उत्पत्ति से दो संबंधित सच्चाइयों को देता है: (1) आदम को हव्वा से पहले बनाया गया था और (2) हव्वा बहकाई गई थी न कि आदम, और वह अपराधिनी हुई। पहली सच्चाई पति और पत्नी के बीच के उचित संबन्ध को स्थापित करती है। जैसा कि सृष्टि के क्रम से सिखाया गया था कि पति प्रमुख होगा, एक ऐसी चीज़ जिसके बारे में पौलुस लिखता है (देखें 1 कुरि. 11:3; इफि. 5:23-24)।

पौलुस द्वारा बताई गई दूसरी सच्चाई का अभिप्राय यह सूचित करना नहीं है कि स्त्रियों को पुरुषों की तुलना में अधिक सरलता से बहकाया जाता है, ऐसा नहीं है। वास्तव में मसीह की देह में पुरुषों की तुलना में स्त्रियां अधिक हैं, अत: ऐसा कहना तर्कपूर्ण हो सकता है कि स्त्रियों की तुलना में पुरुषों को अधिक आसानी से बहकाया जा सकता है। इसके विपरीत, दूसरी सच्चाई दिखाती है कि जब परमेश्वर के ठहराए

गए क्रम की परिवार में उपेक्षा की जाती है, शैतान प्रवेश कर सकता है। मानवता की समस्त समस्या का आरम्भ वाटिका में उस समय हुआ जब एक पुरुष और उसकी पत्नी के बीच का संबंध सही नहीं था—आदम की पत्नी अपने पति के अधीन नहीं थी। आदम ने निश्चय ही अपनी पत्नी को वर्जित फल न खाने के संबंध में बताया होगा (देखें उत्प. 2:16-17; 3:2-3)। तौभी, उसने उसके निर्देश का पालन नहीं किया। बल्कि अपने पति को वर्जित फल खाने के लिए देते हुए उसने उस पर अपने अधिकार को दिखाया (उत्प. 3:6)। इस मामले में आदम हव्वा का नेतृत्व नहीं कर रहा था; हव्वा आदम का नेतृत्व कर रही थी। परिणाम विनाशकारी था।

कलीसिया – परिवार का नमूना
The Church-A Model of the Family

परिवार के लिए परमेश्वर की व्यवस्था को कलीसिया द्वारा प्रगट किया जाना चाहिए। जैसा मैंने पहले भी कहा, यह स्मरण रखना महत्वपूर्ण है कि कलीसियाई इतिहास के प्रथम तीन सौ वर्षों में, कलीसियाई मण्डलियां छोटी हुआ करती थीं। वे घरों में मिलते थे। (पास्टर/प्राचीन/निरीक्षक घरानों के पिताओं के समान होते थे)। परमेश्वर द्वारा निर्धारित यह कलीसियाई ढांचा अधिक घनिष्ठता से परिवार को प्रतिबिम्बित करता है, और वास्तव में यह एक आत्मिक परिवार था। इस पर नारी प्रभुत्व परिवारों के भीतर और कलीसियाओं के बाहर एक गलत संदेश को भेजता था। एक स्त्री पास्टर/प्राचीन/निरीक्षक को प्रतिदिन शिक्षा देते हुए कल्पना करें, और उसका पति आज्ञाकारिता से वहां बैठकर उसकी शिक्षाओं को सुनते हुए उसकी अधीनता में रहता है। यह परिवार में परमेश्वर की व्यवस्था के विरुद्ध होने के साथ-साथ गलत उदाहरण को भी रखेगा।

पौलुस के शब्द इसी बारे में हैं। ध्यान दें कि वे प्राचीन की अनिवार्यताओं के संदर्भ में बहुत घनिष्ठता में पाए जाते हैं (देखें 1 तीमु. 3:1-7), कि वह व्यक्ति पुरुष हो। इस पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि प्राचीनों से कलीसिया में नियमित रूप से सिखाने की अपेक्षा की गई है (देखें 1 तीमु. 5:17)। स्त्रियों के चुपचाप होकर वचन को ग्रहण करने और शिक्षा न देने या पुरुषों पर अधिकार न दिखाने के संबन्ध में दिये गए शब्द कलीसिया की उचित व्यवस्था से संबंधित हैं। स्त्री के अनुपयुक्त होने के बारे में उसने जो कुछ भी कहा वह पास्टर/प्राचीन/निरीक्षक की भूमिका को पूरा करने के एक भाग के रूप में है।

इसका अर्थ यह नहीं कि स्त्री/पत्नी जो अपने पति के अधीन न हो, वह प्रार्थना, भविष्यवाणी या कलीसियाई सभा में परमेश्वर का वचन नहीं दे सकती। वह यह सब कलीसिया में परमेश्वर की ईश्वरीय व्यवस्था का उल्लंघन किये बिना उसी तरह से कर सकती है जिस तरह से वह सारी चीज़ें घर में परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन

किये बिना करती है। कलीसिया में उसे जो करने के लिए वर्जित किया गया है वह उससे कम या अधिक नहीं है जो उसे घर में करने से वर्जित है– अपने पति पर अधिकार न जमाना।

बाद के पदों में हम यह भी ध्यान दें कि स्त्रियां पुरुषों के समान डीकन के कार्य को भी कर सकती हैं (देखें 1 तीमु 3:12)। कलीसिया में डीकन के रूप में या फिर जिसका वास्तविक अर्थ *सेवक* है के रूप में कार्य करना पतियों और पत्नियों के बीच परमेश्वर की ईश्वरीय व्यवस्था का उल्लंघन न होने की मांग करता है।

1 तीमुथियुस 2:11-14 में पौलुस के शब्दों का शेष पवित्रशास्त्र के पदों से मेल करने का यही एकमात्र तरीका है। पवित्रशास्त्र के अन्य अवसरों में हमने परमेश्वर द्वारा स्त्रियों के प्रयोग किये जाने पर विचार किया जो कि कलीसिया के साथ-साथ परिवार में आदर्श के रूप में कार्य नहीं करता, और इस तरह से परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन नहीं करता। इनमें से किसी में भी हम पत्नियों को अपने परिवार में अपने अपने पति पर अधिकार जमाते हुए नहीं देखते। पुन: एक घर में कई परिवारों के बैठे होने की कल्पना करें जिसमें एक पत्नी शिक्षा देने का कार्य कर रही है और उसका पति निष्क्रिय रूप से बैठे हुए उसकी अगुवाई के प्रति समर्पित है। परमेश्वर ऐसा नहीं चाहता, क्योंकि यह उसकी व्यवस्था के विरुद्ध है।

तथापि, दबोरा का इस्राएल में न्यायी होना, हन्नाह का लोगों को मसीह के बारे में बताना, मरियम और उसकी मित्रों का प्रेरितों को मसीह के पुनरुत्थान के बारे में बताना इनमें से कोई भी एक गलत संदेश को नहीं देता और न ही परिवारिक इकाई है। नियमित रूप से होने वाली कलीसियाई सभाएं उन पत्नियों द्वारा गलत संदेश दिये जाने का खतरा हो सकती हैं जो अपने पतियों को सिखाती या उन पर अधिकार जताती हैं।

निष्कर्ष

In Conclusion

यदि हम स्वयं से केवल इतना पूछें, ''स्त्रियों के सेवकाई में काम करने में, दूसरों के साथ करुणा के हृदय से सेवा करने और अपने परमेश्वर प्रदत्त दानों का प्रयोग करने में मूल रूप से क्या गलत हो सकता है? उससे किस नैतिक सिद्धान्त की अवहेलना होगी? कुछ ही समय में हम यह जान जाते हैं कि स्त्री सेवकाई में यदि परमेश्वर की व्यवस्था का विरोध होगा तो पति पत्नी के बीच के संबन्ध को लेकर होगा। दोनों ही 'समस्यात्मक परिच्छेदों' में पौलुस विवाह में ईश्वरीय व्यवस्था बनाए रखने के लिए कहता है।

अत:, हम यह जान पाते हैं कि एक छोटे भाव में ही स्त्रियों के लिए सेवकाई की मनाही है। परमेश्वर कई तरीकों से स्त्रियों को अपने कार्य के लिए प्रयोग करना

चाहता है, और वह ऐसा हज़ारों वर्षों से कर रहा है। पवित्रशास्त्र स्त्रियों द्वारा परमेश्वर के राज्य में किये गए कई सकारात्मक योगदानों के बारे में बताता है, कुछ पर हम पहले ही विचार कर चुके हैं। आइये, हम यह न भूलें कि यीशु की कुछ घनिष्ठ मित्र स्त्रियां थीं (देखें यूहन्ना 11:5) और यह कि स्त्रियों ने उसकी सेवकाई को आर्थिक मदद दी (देखें लूका 8:1-3); ऐसी चीज़ जो पुरुषों के लिए नहीं कही गई। सामरिया के कुएं की स्त्री ने अपने गांव के पुरुषों को मसीह के बारे में बताया, और बहुतेरों ने यीशु पर विश्वास किया (देखें यूहन्ना 4:28-30, 39)। एक स्त्री शिष्य तबीता के बारे में ऐसा कहा गया, ''वह बहुत से भले भले काम और दान किया करती थी'' (प्रेरित. 9:36)। एक स्त्री ने ही यीशु को गाड़े जाने के लिए अभिषिक्त किया था, और बहुत से पुरुषों के द्वारा शिकायत किये जाने पर उसने (यीशु ने) उसकी सराहना की (देखें मर. 14:3-9)। अन्ततः बाइबल बताती है कि यरूशलेम में यीशु द्वारा क्रूस को ले जाते समय स्त्रियां ही रोई थीं, पुरुषों के बारे में ऐसा कुछ नहीं कहा गया है। ये और इस तरह के अन्य कई उदाहरण परमेश्वर की सेवकाई को पूरा करने हेतु उन्हें प्रोत्साहित करने वाले होने चाहिए। हम सबको उनकी ज़रूरत है।